① XIIth psy

अध्याय-2

Date-27.5.2020
ANKIT
Page No. Dr. [illegible] Kumar
Deptt. of Psy
Date R.P. Chandauli.

व्यक्तित्व से तात्पर्य उन विशेषताओं से है, जो अलग-अलग परिस्थितियों में प्रकट होती है। अनेक समयों तथा परिस्थितियों में किसी व्यक्ति के व्यवहार संगति तथा स्थिरता में सुसंगति उत्पन्न व्यक्तित्व की विशेषता होती है। उदाहरण - यदि कोई व्यक्ति ईमानदार है तो किसी भी समय या किसी भी परिस्थिति में वह ईमानदार बना रहेगा। व्यवहार में स्थिति के अनुसार भिन्नताएँ भी घटित होती है क्योंकि व वातावरणीय परिस्थितियों हेतु व्यक्तियों के अनुकूलन में सहायता करती है।

व्यक्तित्व को निम्नलिखित विशेषताओं के द्वारा संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

(i) इसकी मुख्य विशेषताएँ साधारणतया समय के साथ बदलती नहीं है।

(ii) इसके अन्तर्गत शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही घटक होते है

(iii) किसी व्यक्ति विशिष्ट में व्यवहार के रूप में इसकी अभिव्यक्ति पर्याप्त रूप से अनन्य होती है

(iv) यह इस अर्थ में गत्यात्मक

Scanned with CamScanner

होता है अस्थायी रूप। विशेषताएँ सभी उनका आन्तरिक स्थितियों के सभी के कारण बदल सकती हैं। अतः व्यक्तित्व स्थितियों हेतु अनुकूलनशील होता है, स्थिति को व्यक्तित्व की विशेषताओं की अपेक्षा अधिक प्रभावी ही मानते हैं तथा यह व्यक्ति अनेक परिस्थितियों में भिन्न प्रकार का व्यवहार करेगा, इस बात की भविष्यवाणी कर सकते हैं, स्थितिवाद व्यक्तित्व के कुछ विशेष पक्षों पर ही प्रकाश डालता है, सभी पक्षों पर नहीं। अतः मनोवैज्ञानिकों ने प्रथम और द्वितीय उपागमों के बीच मिश्रण स्थापित किया है, प्रथम उपागम के अन्तर्गत व्यक्ति के प्रेक्षित व्यवहार तथा विशेषताओं के कुछ व्यापक आयामों का प्रयोग कर प्रत्येक व्यक्तित्व के विवेचन का प्रयत्न करता है।

अन्तः क्रियात्मक उपागम - इसके अन्तर्गत स्थिति के अनुसार विशेषताएँ हमारे व्यवहारों का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, लोग उचित एवं निश्चित प्रकार का व्यवहार करेंगे यह उनके आन्तरिक व्यक्तित्व विशेषक पर निर्भर नहीं करता अपितु उस पर निर्भर करता है कि विशेष स्थिति में बाह्य पुरस्कार या स्वतन्त्रता उपलब्ध है या नहीं।